बाप से अविनाशी रत्नों का ले फिर उन्हें करना दान
यही अविनाशी रत्नों का दान ही सद्गति कराता
घर का व स्वर्ग का रास्ता बाप ही हमें बताता
यह नया रास्ता सिवाए हम बच्चों के कोई नही जानता
स्वर्ग अलग है और (घर) शान्तिधाम अलग होता
अशरीरी बनने का करना अभ्यास
धर्मराज की सज़ा से बचना तो बनना पावन
अब घर जाना तो बेहद की आमदनी करनी ज़मा
पूरा -पूरा नष्टोमोहा बनना
चेक करना देह का,सम्बन्ध का ,वैभव का बंधन तो नही खींचता
जहाँ होगा बंधन वहाँ होगा फिर आकर्षण
स्वतंत्र हो बाप समान होना कर्मातीत
राजधानी स्थापित करनी तो स्नेह और सहयोग के साथ शक्ति रूप भी बनना

ॐ शांति!!!
मेरा बाबा!!!